श्री राम स्मृति वन/पर्वत

स्मृति वन/पर्वत शहर - नगरों से दूर, गाँवों खाली भूमि व पहाड़ियों को हरा-भरा करने का पर्यावरण संवर्द्धन का, भूमि-जल संरक्षण का प्रकृति-संतुलन ग्लोबल वार्मिंग रोकने हेतु बहुत ही उपयोगी सेवा कार्य है। साथ ही समाज में व्यक्ति की स्मृतियों, जन्म दिवस, विवाह दिवस, पुण्य तिथि आदि को चिर स्थायी बनाये रखने केलिये वृक्षों को रोपित करने का एक देवकार्य भी है।

वन/पर्वत घटक

• उपयोगी वृक्ष • वनौषधियाँ • ध्यान- प्राणायाम स्थल
• भ्रमण परिक्रमा पथ।

उपलब्धियाँ

• पर्यावरण संरक्षण- संवर्धन • भूमि-जल संरक्षण • पक्षियों के लिये आश्रय • जन्म दिवस, विवाह दिवस, पुण्य तिथी आदि स्मृतियों का चिरस्थायी स्थल ।

नवग्रह वाटिका

सूर्य- आक, चंद्र-पलाश, मंगल-खैर, बुध-अपामार्ग, बृहस्पति-पीपल, शुक्र-गूलर, शनि-शमी, राहू-दूर्वा, केतु-कुश।

राशि वाटिका

मेष-खैर, वृषभ-गूलर, मिथुन-अपामार्ग, कर्क-पलास, सिंह-मदार, कन्या-दूर्वा, तुला-गूलर, वृश्चिक-खैर, धनु-पीपल, मकर-शमी, कुम्भ-शमी, मीन-कुश।

संकल्प

युगऋषि परम पूज्य गुरूदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के जन्म शताब्दी वर्ष 2011 पर संकल्प लें किअपने घर, अपने गाँव, अपने नगर-शहर में वृक्ष गंगा अभियान को किसी न कि सी प्रकल्प के माध्यम से अवश्य पूरा कर महाअभियान में अपनी भागीदारी करेंगे।

श्रीराम वाटिका

प्रत्येक घर केलिये यह बहुत ही उपयोगी प्रकल्प है। इसकेमाध्यम से प्रत्येक घर, जहाँ वाटिका हेतु भूमि न भी हो, वहाँ भी गमलों में युगऋषि केस्वप्न को साकार कर मसाला वाटिका, गमलों में स्वास्थ्य वर्धक जड़ी बूटियाँ, तुलसी, दिव्य वृक्ष वास्तु मण्डल, शाकसब्जियाँ आदि लगाये, जिससे परिवार को स्वास्थ्य, स्वावलंबन व सकारात्मकऊर्जा प्राप्त हो।

वाटिका घटक

• वास्तु वृक्ष मण्डल • मसाला वाटिका
• स्वास्थ्य रक्षक औषधियाँ • शाक सब्जियाँ • तुलसी वाटिका।

उपलब्धियाँ

• स्वास्थ्य • सकारात्मक उर्जा • श्रम का उपयोग • धन की बचत
• राष्ट्र सेवा।

वृक्ष गंगा अभियान संबंधित पुस्तकें

- तरू सिंचन
- तरू पुत्र
- मसाला वाटिका
- केंचुआ खाद संदर्शिका
- गमलों में स्वास्थ्य
- दिव्य जड़ी-बूटियाँ
- जड़ी-बूटी चिकित्सा एवं संदर्शिका
- तुलसी के चमत्कारी गुण
- जडी-बूटी की व्यावसायिक खेती
- शाक उगायें अन्न बचायें
- वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य

सम्पर्क सूत्र

कार्यालय, युवा जागृति अभियान
एवं सप्त आंदोलन,
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
फोन नं.- (1334) 260602 (एक्स.436)
Email : youthcell@awgp.org Web : www.awgp.org

www.awgp.org www.diya.net.in

वृक्ष गंगा अभियान

एक करोड़ वृक्षारोपण

(तरु पुत्र / तरु मित्र बनें)

दश कूप समो वापी दशवापी समो ह्रदः।
दश ह्रद समः पुत्रः दशपुत्र समो द्रुमः।।

भावार्थ - दस कुओं के समान एक वापी होती है। दस वापियों के समान एक सरोवर होता है। दस सरोवरों के समान एक पुत्र का महत्व है। इसी प्रकार दस पुत्रों के समान एक वृक्ष लगाना पुण्यदायी होता है।

वृक्ष विषपायी शिव है जो सदा कल्याण करते हैं संसार के विष (CO_2) को पीकर कल्याणकारी प्राणदायी प्राण वायु (O_2) प्रदान करते हैं। अपने जीवनकाल में करोड़ों की सम्पदा प्रकृति में लुटाते हैं और अपने देवता होने का प्रमाण देते हैं। एक मनुष्य को सम्पूर्ण जीवनकाल में जितनी ऑक्सीजन एवं काष्ठ की आवश्यकता होती है उसे तीन पेड़ मिलकर पूरा करते हैं। अतः हम सभी को अपनी सासों के कर्ज से मुक्ति हेतु न्यूनतम तीन वृक्ष लगाना और पालना चाहिए।

वृक्ष ही हमारे जीवन साथी हैं बचपन के पालने से लेकर अन्त्येष्टि की लकड़ी इन्हीं से प्राप्त होती है। वृक्ष ही हैं जो बादलों को आकर्षित करते नदियों को सदानीरा बनाते और प्राणी जगत के जीवन को आधार देते हैं।

एक वृक्ष के अनुदान (50 वर्ष में)

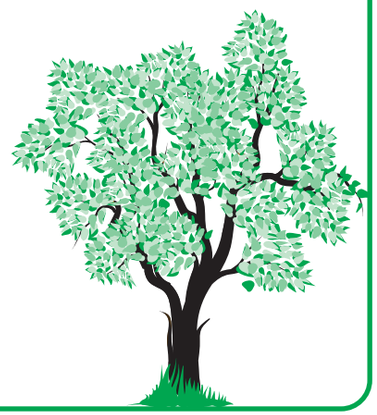
१. प्राण वायु (Oxygen)	Rs. 5,00,000
२. वायु प्रदूषण नियंत्रण एवं भूमि की उत्पादकता वृद्धि (Air Pollution Control & Improvement in Soil Fertility)	Rs. 31,00,000
३. भूमिक्षरण नियंत्रण (Soil Erosion Control)	Rs. 15,60,000
४. जल संरक्षण (Water Conservation)	Rs. 18,80,000
५. पशु पक्षियों का आश्रय (Shelter Wildlife)	Rs. 16,60,000
६. काष्ठ, फल, चारा (Wood, Fruits & Fodder)	Rs. 4,00,000
कुल योग (एक करोड़ एक लाख रुपये)	**Rs. 1,01,00,000**

अतः **वृक्ष गंगा अभियान** के अन्तर्गत तरुपुत्र/तरुमित्र योजना में भागीदार बनकर एक वृक्ष का रोपण कर उसे पुत्रवत् पालने अथवा मित्रवत् उसकी रक्षा करने का संकल्प करें। समाज को एक करोड़ से अधिक राशि का अनुदान देने का पुण्य कमाऐं तथा आने वाली पीढ़ियों को विरासत में हरा जीवन और खुशहाली देकर जायें।

अखिल विश्व गायत्री परिवार
शान्तिकुञ्ज-हरिद्वार

वृक्ष प्रकृति के परिधान है, आध्यात्मिक प्रशिक्षक हैं, जल दाता - जीवन दाता है, मानव जाति के अनन्य सेवक हैं, प्राण दाता, आरोग्य दाता धनवन्तरी हैं तथा कर्ण और दधीचि जैसे दानदाता हैं।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य



श्रीराम स्मृति उपवन
(शहर - नगर के सार्वजनिक स्थलों के लिये)

श्रीराम स्मृति वन/पर्वत
(शहर - नगर से दूर व गाँवों की परती/ खाली भूमि व पहाड़ियों के लिये)

श्रीराम वाटिका
(घर व फार्म हाऊस आदि निजी स्तर के लिये)

उद्देश्य
आसन्न पर्यावरण संकट यथा-ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव, मौसम चक्र का असंतुलन, बढ़ता प्रदूषण, विरल ओजोन परत के संबंध में जन - जागरण करना एवं समाधान हेतु वृक्षगंगा अभियान में भागीदार बनाना।

श्री राम स्मृति उपवन

वृक्ष गंगा अभियान का शहर नगरों के सार्वजनिकस्थलों के लिये यह एकबहुत ही उपयोगी सेवा का रचनात्मकप्रकल्प है। इसकेद्वारा मानव समाज को अच्छा स्वास्थ्य, पर्यावरण का सवंर्धन और प्रकल्प को संचालित करने वाले व्यक्ति/संस्था को स्वावलंबन प्राप्त होता है।

आज शहर-नगरों में प्रातः/संध्या काल भ्रमण के लिये दूर या यातायात भरी सड़को पर जाना पड़ता है, फिर भी शुद्ध स्वास्थ्यवर्द्धकवायु नहीं मिलती है।

उपवन के एक्यूप्रेशर पथ पर भ्रमण से व्यक्तिका प्राकृतिक एक्यूप्रेशर उपचार होता है। जीवन निरोग बनता है। पथ के साथ लगी आयुर्वेद औषधियों की आरोग्यवर्द्धक प्राणवायु प्राप्त होती है। पथ के मध्य स्थापित दिव्य वृक्षों के नवग्रह वृक्ष मण्डल, वास्तु वृक्ष मण्डल, त्रिवेणी, त्रिदेव, हरिशंकरी, देववृक्ष, तुलसी, कल्पवृक्ष, यज्ञशाला आदि की परिक्रमा से जीवन में सकारात्मक ऊर्ज्जा बढ़ती है, जिससे जीवन सुखी व समृद्ध होता है।

प्राकृतिकआहार केन्द्र संचालित होने से ताजे स्वास्थ्य वर्द्धक प्राकृतिकपेय, ज्वारा, आँवला, एलोवेरा, लौकी, करेला, पालक, टमाटर, गाजर आदि रस, गौमूत्र, पंचगव्य, शहद-नीबू-पानी और अंकुरित आहार सेवन के कारण प्राकृतिकरूप से व्यक्ति स्वस्थ रहता है।

श्रीराम स्मृति उपवन को शहर-नगर-कॉलोनी के मध्य सार्वजनिक या निजी उद्यानों को गोद लेकर या भूमि खरीदकर विकसित कर संचालन व्यक्ति या संस्था स्तर पर किया जा सकता है।

उपवन घटक :
- एक्यूप्रेशर पाथ • पिरामिड यज्ञ शाला • वास्तु वृक्ष मण्डल
- नवग्रह वृक्ष मण्डल • देव वृक्ष • कल्प वृक्ष • हरिशंकरी • त्रिवेणी
- त्रिदेव • पक्षी विहार • ज्वारा वाटिका
- ध्यान प्रणायाम स्थल • पिरामिड यज्ञ शाला
- प्राकृतिक आहार केन्द्र

उपलब्धियाँ
- पर्यावरण संरक्षण • स्वास्थ संवर्धन
- स्वावलम्बन
- आयुर्वेद औषधि उपयोगिता, जानकारी, जागरूकता।

